प्यार-सहन की ओस की बूँदें

ठंडे का मौसम है।
सारी प्रकृती छिपकती रहती॥
हरेक पेड़ और पौधें,
ओस की बूँदों से भरा रहती है॥

कितनी अच्छी है यह दृश्य!
पौधों और फूलों हर्षयुत से रहती है॥
ओस की बूँदें उनको सोने में जागते हैं।
गीली हवा भी प्यार से बहती है॥

क्या तुम्हें इस ओस की बूँदें देखते हैं।
उस ओस की बूँदें हमको खुशी रहती है॥
चिड़ियों के लिए ओस की बूँदें दोस्त है।
वह उसको उड़ने के लिए ताकत देती है॥

सूरज की उदय पर आकर यह बूँदें
धूप की शोभा बढ़ती है॥

ओस भरे वायुमंडल से आकर
यह धूप ज्यादा चमकती है।

क्यों इस ओस की बूँदें बरसने लगी?
क्यों वह बादल की गरजते को डरती है?
हे प्रकृति, तुम जानता है क्यों?
हाँ, तुम्हारा उत्तर भी नहीं॥

यह छोटे ओस की बूँदें,
जीवन की तरह छोटी है॥
सुबह में जन्म लिया और
कुछ समय बाद मर लिया॥

क्या इंद्रभगवान इस बूँदों को सृष्टी देता है?
ठंडे की समय में नीलांबर से आकर यह बूँदें,
खिलने होने की तैयार कर लिया,
फूलों की शोभा बढ़ती है॥

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

ओस की बूँदें प्रकृती की अश्रु हैं।
प्रकृती की रोना है ओस की बूँदें ॥
अपनी परेशानियों को भूलकर
प्रकृती सब समस्याओं को खुशी बनती है ॥

क्या हम प्रकृती को संभालता है ?
उस प्रकृती की दर्द को मानता है ॥
हम प्रकृती को संभाल न किया तो
ओस की बूँदें की अनुपस्थिति जैसा धरती भी नहीं होती

धरती जैसा छोटी ओस की बूँदें।
कितना सुंदर है उस छोटे बूँदें ॥
प्रकृती की अश्रु होती यह बूँदें
मानव जीवन को सफल बनता ॥

हे मानव, तू कितना भागयवान है ?
तुम नाश करते यह प्रकृति तुमको क्या-क्या देना?
तुमको खुशी बनने के लिए यह प्रकृति ,
अपना अश्रु भी मनोहर बनता ॥

Item Code: 958 Participant Code: 126

हे ओस की बूँदें ।
तुम कितना सुंदर और मन सुखदाई था ॥
क्यों तुम्हें जल्दी अप्रत्यक्ष होना ;
क्या तुम्हें कोई दुश्मन है ?

हाँ । हम जिंदगी जीते हैं जैसा, ।
बार - बार ठंडा मौसम आई है ॥
हमारा प्रतीक्षा है तुम्हें बार-बार आना ।
हम इस ओस की बूँदें को प्यार करती हैं ॥

प्रकृति, क्या तुम तुम्हारे दर्द सहती है ?
एक बार भी इस ठंडा मौसम देना है क्यों ।
क्या हम बरसने ओस की बूँदें प्रतीक्षा करूँ ?
फिर एक बार भी आना है ओस की बूँदें ॥